ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 16 कुल पृष्ठ-8 17 से 23 दिसम्बर, 2020 दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 मा. कृ.-02

शराब ठेके खुलवाकर गरीब जनता को लुटवा रही सरकारें

– स्वामी आर्यवेश

देश में राष्ट्रीय स्तर पर नशाखोरी पर प्रतिबन्ध लगे तथा शराब के उत्पादन व विक्रय पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाये

– स्वामी रामवेश

धार्मिक पाखण्ड तथा अन्धविश्वास के कारण भोली-भाली धर्मभीरू जनता का हो रहा है शोषण

– रणधीर सिंह रेढू

माता-पिता खुश तो परमात्मा भी खुश

– ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य

महिलाओं पर हो रहे अत्याचार, अनाचार, कन्या भ्रूण हत्या एवं बलात्कार की घटनाएँ सभ्य समाज के माथे पर कलंक

– बहन प्रवेश आर्या

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जीन्द (हरियाणा) में भव्यता के साथ सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान एवं नशाबन्दी संघर्ष समिति हरियाणा के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी के संयोजकत्व में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द एवं अमर शहीद पं. राम प्रसाद बिस्मिल की स्मृति में दिनांक 11 से 13 दिसम्बर, 2020 तक जीन्द, हरियाणा में त्रिदिवसीय प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। यह आयोजन महर्षि दयानन्द पार्क अर्बन स्टेट, जीन्द में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की।

इस अवसर पर युवा सम्मेलन, नशाखोरी सम्मेलन, कन्या भ्रूण हत्या विरोधी सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन सहित अनेकों कार्यक्रम आयोजित किये गये। समारोह में मुख्य रूप से श्री रणधीर सिंह रेढू, श्री जगदीश सींवर, चौ. सूरजमल जुलानी, श्री सुनील एडवोकेट, श्री जय भगवान, श्री महेन्द्र श्योकन्द, श्री वेद प्रकाश आर्य, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, बहन पूनम एवं बहन प्रवेश आर्या, श्री अग्निदेव ब्रह्मचारी, श्री जगफूल ढिल्लो, श्री बलजीत हुड्डा, श्री कुलदीप आर्य व श्री सुनील शास्त्री सहित अनेक गणमान्य महानुभावों ने अपने विचारों से श्रोताओं को लाभान्वित किया। समारोह में श्री सज्जन सिंह राठी, श्री अजीत पाल, डॉ. राजपाल आर्य, श्री कर्ण सिंह रेढू, श्री जगदीश आर्य, श्री दलबीर आर्य, श्री केवल सिंह, श्री नफे सिंह, श्री सूरजमल पहलवान, श्री शंकर आर्य, श्री धर्मवीर ढिल्लो, हरिकेश राविश सहित आस–पास के क्षेत्रों से सैकड़ों व्यक्ति उपस्थित रहे।

इस अवसर पर अध्यक्षीय भाषण देते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में केन्द्र सरकार से देश में पूर्ण नशाबन्दी की माँग की। उन्होंने कहा कि नशे के कारण आज देश का युवा बर्वाद हो रहा है तथा गरीब किसान और मजदूर लुट रहे हैं। सरकारें शराब के ठेके खुलवाकर गरीब जनता को लुटवा रही है। उन्होंने कहा कि नशे के कारण जब देश का मेहनतकश मजदूर, किसान व युवा बर्वाद हो जायेगा तो देश के विकास की अवधारणा भी पूरी तरह से निष्फल एवं निरर्थक हो जायेगी। अतः यह आवश्यक है कि देश में केन्द्र सरकार एक राष्ट्रीय नीति घोषित करे और सख्ती के साथ शराब के व्यवसाय को बन्द कराये। स्वामी आर्यवेश जी ने धार्मिक अन्धविश्वास, सामाजिक अन्याय एवं महिला उत्पीड़न के विरुद्ध भी जनता का आह्वान किया कि वे सभी सामाजिक बुराईयों से दूर रहें। समाज में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार, अनाचार, कन्या भ्रूण हत्या एवं बलात्कार की घटनाओं को समाप्त करने के लिए समाज के जागरूक लोगों को आगे आना चाहिए और इन बुराईयों को मिटाने के लिए अभियान चलाना चाहिए। इसी प्रकार समाज में बढ़ रहे जातिवाद के जहर के कारण समाज एवं राष्ट्र कमजोर हो रहा है जो हम सबके लिए एक चुनौती है। देश में जातिवाद के विरुद्ध कानून बनने के बावजूद अभी समाज के कुछ लोगों की मानसिकता विकृत है और वे जाति–पात एवं छुआछूत को बढ़ाने में सक्रिय रहते हैं। आज की राजनीति भी जातिवाद एवं साम्प्रदायिकता पर आधारित हो चुकी है जिससे राष्ट्र अन्दर से खोखला होता जा रहा है।

धर्म के नाम पर चल रहे पाखण्ड तथा अन्धविश्वास के कारण भी जनता का शोषण किया जाता है और अनेक पाखण्डी बाबा अपने को भगवान बताकर लोगों की भावनाओं का दोहन कर रहे हैं। इससे धर्म का सच्चा स्वरूप विकृत हो रहा है। आर्य समाज ने प्रारम्भ से ही उक्त बुराईयों के विरुद्ध अभियान चलाकर समाज को जागृत करने का कार्य किया है और आज भी इस दिशा में अभियान चल रहा है। प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन के माध्यम से हम यह कहना चाहते हैं कि कोरोना संक्रमण के दौरान पूरे विश्व के पटल पर वैदिक संस्कृति के तीन स्तम्भ यज्ञ, योग एवं आयुर्वेद को व्यापक रूप से लोगों ने अपनाया है और इससे उन्हें कोरोना जैसी महामारी से लड़ने में लाभ भी मिला है। अतः हमें यह कहते हुए गर्व की अनुभूति हो रही है कि वैदिक संस्कृति के द्वारा ही विश्व में शांति, सौहार्द एवं स्वास्थ्य को प्राप्त किया जा सकता है।

शेष पृष्ठ 7 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

गुरुकुल : स्वामी श्रद्धानन्द का सिद्ध स्वप्न

– डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

वैदिक धर्म हमारी सभ्यता, संस्कृति, दर्शन, आचार, मर्यादाओं आदि का आधार है जिसके बिना हम खड़े नहीं रह सकते। यहीं हमें विश्वबंधुत्व का संदेश मिलता है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की स्थापना वैदिक आदर्शों को आधार बनाकर हुई है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भी अन्य शिक्षा प्रणालियों की तरह अपने ढंग की एक विशेष शिक्षा प्रणाली है। जिस प्रकार मौन्टेसरी शिक्षा प्रणाली, वर्धा योजना या प्रोजेक्ट सिस्टम नाम से विविध शिक्षा प्रणालियां हैं उसी प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द ने ऋषि दयानन्द से प्रेरणा लेकर इस प्रणाली की स्थापना की थी। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषताएं हैं – गुरु–शिष्य का दिन–रात का घनिष्ठ सम्बन्ध, ब्रह्मचर्य तथा चरित्र–निर्माण। गुरुकुल प्रणाली के अतिरिक्त अन्य किसी शिक्षा प्रणाली में चरित्र निर्माण को इतनी अधिक प्राथमिकता तथा महत्ता नहीं दी गई। यह कहना कि अन्य शिक्षा प्रणालियों में चरित्र निर्माण को कोई स्थान नहीं, गलत होगा, परन्तु इसमें संदेह नहीं कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही ऐसी प्रणाली है जिसके विषय में कहा जा सकता है कि इस शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य पुस्तक शिक्षा के साथ–साथ चरित्र निर्माण करना है।

गुरुकुल का अर्थ है गुरु का कुल, गुरु का परिवार। यहां विद्यार्थी माता–पिता के कुल से गुरु के कुल में प्रवेश करता है। एक छोटे और सीमित परिवार से निकलकर एक विशद और सार्वभौम परिवार में प्रविष्ट होता है, जहां वह माता–पिता के परिवार की सीमाओं को लांघकर समाज के हर युवा को अपना समकक्ष तथा परिवार का अंग समझता है। मैं कुलपति और कुलाधिपति और अधिकारियों से भी कहूंगा कि आप अपने अंतेवासियों को वैदिक संस्कृति के आदर्शों को जीवन में घटाने की प्रेरणा दें और ऐसे छात्र उत्पन्न करें जो जात–पांत की सीमाओं को लांघकर, ऊँच–नीच के भेद को भुलाकर एक ऐसे समाज का निर्माण करें जिसमें 'संगच्छध्वं संवदध्वम्' का आदर्श क्रियात्मक रूप धारण करें और जिसमें चरित्र निर्माण को शिक्षा का आदर्श समझा जाये।

परिवर्तन प्राकृतिक नियम हैं। बीज अंकुरित होकर वृक्ष बनता है, पुष्पित फलित होकर शीतलता, छाया, फूल–फल प्रदान करता है। अतः संस्थाओं में भी युगानुरूप परिवर्तनों की आवश्यकता होती है। गुरुकुल की स्थापना के समय हमारी शिक्षा क्रांतिकारी वातावरण में हुई थी जिसमें शिक्षा का उद्देश्य ऐसे युवक उत्पन्न करना था जो स्वावलंबी हों और स्वतंत्रता के लिए विदेशी सरकार से लोहा ले सकें। परन्तु आज स्थिति बदल गई है। इस स्वतंत्रता के युग में हमें ऐसे युवक उत्पन्न करने की आवश्यकता है जो ऊँचे सरकारी पदों पर आसीन होकर अपनी उत्कृष्ट चारित्रिक विशेषताओं के कारण सरकार के सहयोगी बनकर देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, अंधकार, पारस्परिक कलह–द्वेष को दूर करके राष्ट्र की एकता और समृद्धि में सहायक बनें। इसलिए जहां एक ओर चारित्रिक उच्चता तथा वैदिक संस्कृति के जन–जन के जीवन में व्याप्त होने की आवश्यकता है वहां इस प्रकार के पाठ्यक्रमों और अध्ययन अध्यापन की आवश्यकता है जिससे यहां के छात्र हर प्रकार के सरकारी पदों पर आसीन हों, वे आई.ए.एस., पी.सी.एस., भारतीय रक्षा सेवाओं, डॉक्टरी, इंजीनियरी तथा अन्य क्षेत्रों में उच्च स्थान प्राप्त कर देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर कर सके।

स्वतंत्रता से पूर्व गुरुकुल सरकारी अनुदान नहीं लेता था। वह आत्म निर्भर था। यह आत्म निर्भरता विद्यार्थियों को भी मिली थी। उन्होंने अपने पैरों पर खड़े होना सीखा। जब व्यक्ति आत्म निर्भर होता है, दूसरे के सहारे पर नहीं, अपने सहारे पर खड़ा होता है, तब उसके भीतर से शक्ति उत्पन्न होती है जो उसे सब बाधाओं से लड़ने की शक्ति प्रदान करती है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व के समय के गुरुकुल के छात्र अनेक क्षेत्रों में उच्च स्थान और अप्रत्याशित ख्याति प्राप्त कर सके। पत्रकारिता के क्षेत्र में पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति, आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार, अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार, कृष्णचन्द्र विद्यालंकार, आनन्द विद्यालंकार, क्षितीश विद्यालंकार, सतीश विद्यालंकार जैसे अनेक प्रकाश स्तंभ गुरुकुल ने दिए।

इतिहास के क्षेत्र में डॉ. प्राणनाथ विद्यालंकार, श्री जयचंद्र विद्यालंकार, डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार तथा प्रो. हरिदत्त वेदालंकार जैसे प्रकांड पंडित गुरुकुल ने प्रदान किये हैं। इनके द्वारा लिखी गई पुस्तकें समस्त भारत में पढ़ाई जाती हैं। संस्कृत तथा वैदिक अध्ययन के क्षेत्र में भी गुरुकुल ने अनेक प्रतिभाएं दी हैं। स्वामी अभयदेव विद्यालंकार, पं. जयदेव विद्यालंकार, बम्बई के सत्यकाम विद्यालंकार, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, रामनाथ वेदालंकार तथा अन्य अनेक स्नातक वेद के उच्चकोटि के विद्वान् हैं। उपन्यास तथा कहानी के क्षेत्र में भी हमारे स्नातकों में पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति, पं. चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, सत्यपाल विद्यालंकार, पं. विद्यानिधि विद्यालंकार, श्री विराज विद्यालंकार, डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार की देन चिरस्मरणीय है।

पुरातन स्नातकों ने जो कार्य किया है उसकी तुलना यदि किसी भी विश्वविद्यालय के स्नातकों के कार्य से की जाये तो स्पष्ट हो जायेगा कि उनकी देन प्रतिशत की दृष्टि से अत्यधिक तथा विशिष्टतम है।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व गुरुकुल के छात्र परिस्थिति से लड़ते हुए आत्म निर्भर हुए और उन्होंने जीवन में अपने आत्मबल से जीवन का रास्ता सफलतापूर्वक बनाया तथा तय किया।

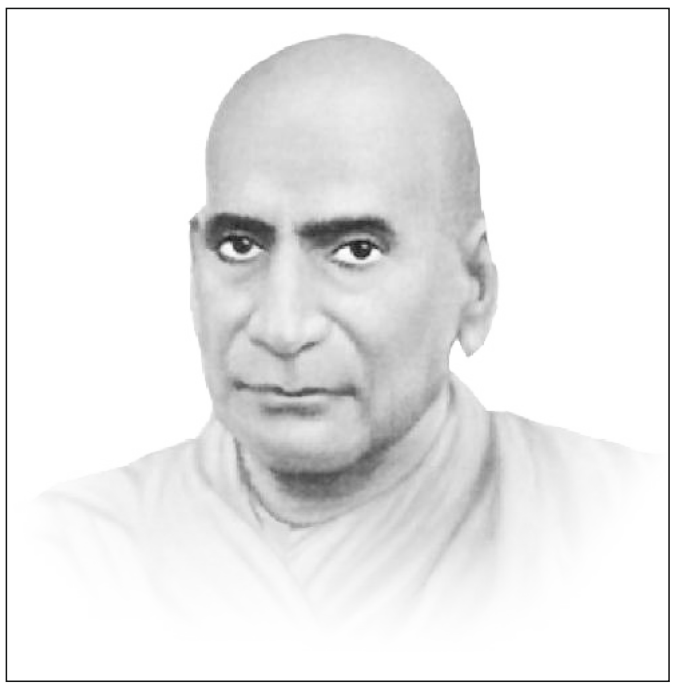

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यद्यपि हमारे रास्ते तथा उद्देश्यों में बदलाहट हुई तथापि मैं अनुभव करने लगा हूं कि हम गुरुकुल के मुख्य आधारभूत सिद्धान्तों से दूर होते जा रहे हैं। आप क्षमा करें, गुरुकुल का जो वर्तमान रूप होता जा रहा है, वह अन्य कॉलेजों से भिन्न नहीं रहा। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के जिन आधारभूत सिद्धान्तों को लेकर इस संस्था की स्थापना हुई थी, हम उन्हें भूलते जा रहे हैं। कहां है वह गुरु–शिष्य का दिन–रात का आधारभूत सम्बन्ध? कहां है वह कुल की परिवार की भावना? कहां है वह हमारी प्राचीन परम्परा? कहां है वह लगन? गुरुकुल में परिस्थितिवश परिवर्तन आना आवश्यक है, इसमें संदेह नहीं, परन्तु अपने आधारभूत सिद्धान्तों को खोकर नहीं। उन सिद्धान्तों को सप्राण तथा सजग रखते हुए हमें परिवर्तन लाना हैं गुरुकुल को ऐसा रूप देना है जिससे यहां के कार्यकर्ता सिर्फ बाहर के छात्रों की भर्ती कर संतुष्ट न हो जायें, परन्तु अपने बच्चों को भी यहीं भर्ती करें। मुझे यह देखकर दुख होता है कि गुरुकुल की सभा के संचालक भी अपने बच्चों को यहां भर्ती नहीं करते, न यहां के अध्यापक ही अपने बच्चों को यहां भर्ती करते हैं। दिल्ली पब्लिक स्कूल या सेंन्ट्रल स्कूलों की बसें गुरुकुल के कार्यकर्ताओं के बच्चों के लिए यहां आती है और उन्हें गुरुकुल के बाहर के स्कूलों में शिक्षा के लिए ले जाती है। इसका यह अर्थ है कि गुरुकुल की सभा के संचालक तथा गुरुकुल के अध्यापक भी स्वयं यहां की शिक्षा से संतुष्ट नहीं हैं। मैं गुरुकुल के संचालकों से अनुरोध करूंगा कि जो कमी वे यहां अनुभव करते हैं उसे वे स्वयं दूर क्यों नहीं कर देते। अगर यहां की पाठविधि में कोई कमी है तो उसे दूर करना आपके हाथ में है। अब तो विदेशी शासन नहीं है, अपना शासन है। अपना दृष्टिकोण बदलिए और ऐसा पग उठाईये ताकि हर व्यक्ति गुरुकुल में अपने बच्चे की भर्ती ही न करे, अपितु भर्ती करने के लिए उत्सुक हो जाये।

मेरे सामने भविष्य के गुरुकुल का यह सपना है कि गुरुकुल से ऐसे स्नातक निकलें जिनका तपस्यामय जीवन हो, जो हिन्दी में पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी की तरह शुद्ध हिन्दी लिख बोल सकें, जो संस्कृत में उव्वट तथा ऋषि दयानन्द जैसा उच्चतम संस्कृत का ज्ञान रखते हों जो अंग्रेजी में शेक्सपीयर तथा मैकाले की कोटि के हों, जो विज्ञान में श्री सतीश धवन तथा प्रो. यशपाल सरीखे वैज्ञानिक हों, जो हर क्षेत्र में उच्च से उच्चतर शिखर को छू सकें। उड़ान लीजिए तो ऊँची उड़ान लीजिए। सबकुछ संभव है जो आज असंभव तथा कठिन प्रतीत होता है, वह प्रयत्न करने पर कालांतर में संभव तथा सुगम हो जाता है। एक भव्य भवन को बनाने के लिए उसकी नीव को दृढ़ करना होता हैं अगर हम मानव समाज के भवन को सुदृढ़ नींव पर खड़ा करना चाहते हैं तो उसकी नींव को सबसे पहले दृढ़ करना होगा। हमारी शिक्षा संस्था की नीव वह है जहां से बालक शिक्षा जगत् में बाल्यकाल में प्रवेश करता है। आप अगर अपने विद्यालय विभाग को दृढ़ कर सकें तो संपूर्ण संस्था अपने आप उन्नति के मार्ग पर चल पड़ेगी। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के आधारभूत सिद्धान्तों को आदर्श तक पहुंचाने के लिए आपको विद्यालय विभाग को दृढ़ करना होगा। गुरुकुल का विश्वविद्यालीय रूप तभी उभरेगा जब आपके विद्यालय विभाग इतना उन्नत हो जायेगा कि सब लोग अपने बच्चों को यहां भर्ती ही नहीं करेंगे, भर्ती करने के लिए उत्सुक होंगे, तब हमें बाहर से एक छात्र भी नहीं लेना पड़ेगा, हमारे विश्वविद्यालय में वही छात्र होंगे जो हमारे विद्यालय विभाग की शिक्षा–दीक्षा में से गुजरकर आयेंगे।

मेरा अनुरोध है कि आज के बदलते युग में आप गुरुकुल के रूप को ऐसा बदलिए कि यहां के आदर्शों, यहां की भावनाओं, यहां के रंग में रंगे हुए छात्र ही आपके महाविद्यालय विभाग में प्रविष्ट हों, आपको बाहर से छात्र लेने की आवश्यकता न हो, और वे ही छात्र स्नातक बनकर समाज में प्रविष्ट हों, जो हिन्दी संस्कृत के पंडित हों, अंग्रेजी के उच्चकोटि के विद्वान् हों और इस योग्यता के साथ–साथ वे किसी जिले में मजिस्ट्रेट बनें, किसी जगह इंस्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस हों, किसी जगह कर्नल हों, कमांडर हों और किसी जगह सरकारी उच्च पदों पर आसीन हों। देश की मांग है और आवश्यकता है कि ऐसी शिक्षा में दीक्षित व्यक्ति ही देश के कोने–कोने में व्याप्त हो जायें। जैसे किसी युग में विदेशी सरकार से विद्रोह करने वाले स्वतंत्रता सेनानियों की आवश्यकता थी जिसे गुरुकुल ने पूरा किया, वैसे ही आज देश को ऐसे सरकारी सेनानियों की आवश्यकता है जो देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, ईर्ष्या–द्वेष, कलह, भेदभाव को अपने आदर्श क्रियात्मक जीवन से दूर कर सकें, जिसे गुरुकुल जैसी प्राचीन आदर्शों से ओत–प्रोत संस्था ही पूरा कर सकती है परन्तु इस स्थिति में पहुंचने के लिए हमें अपने–आपको बदलना होगा। खड़ा पानी सड़ जाता है, बहता पानी तरोताजा रहता है और गन्दगी को दूर कर देता है। इस बदलाहट के विषय में किसी ने ठीक ही कहा है।

तू भी बदल ए गाफिल जमाना बदल गया।

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य रामानन्द जी का असामयिक निधन

आर्य जगत के प्रसिद्ध एवं उच्चकोटि के मर्मज्ञ विद्वान् तथा आर्य समाज शिमला (हिमाचल प्रदेश) के प्रधान आचार्य रामानन्द जी का विगत दिनों असमय निधन हो गया है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आचार्य रामानन्द जी के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि आदरणीय आचार्य रामानन्द जी के साथ मेरी व्यक्तिगत रूप से निरन्तर आत्मीयता बनी रही तथा आर्य समाज एवं सार्वदेशिक सभा के निमित्त सदैव उनका विशेष सहयोग एवं योगदान मुझे प्राप्त होता रहा। वह आजीवन आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए कार्य करते रहे। वैदिक सिद्धान्तों पर उनकी विद्वतापूर्ण प्रवचन एवं भाषण की शैली

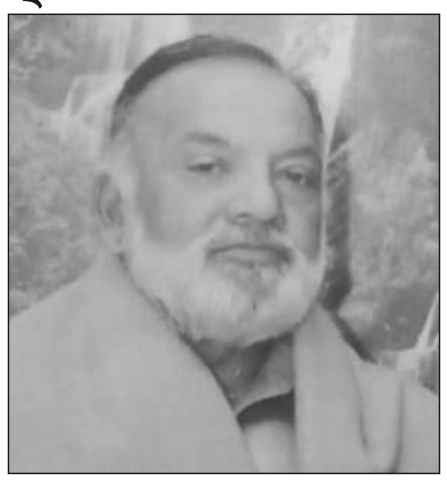

इस प्रकार की होती थी जिसे सुनकर श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो जाया करते थे। ऐसे योग्य विद्वान् का अचानक हम सबके बीच से चले जाना आर्य समाज, राष्ट्र एवं उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति है। परन्तु परमात्मा के नियम के समक्ष नतमस्तक होने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं है।

मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा समस्त आर्य जगत की ओर से आदरणीय आचार्य जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा उनके पारिवारिक जनों एवं शुभचिन्तकों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर विशेष

विशाल शरीर में विशाल आत्मा

– श्री विष्णु प्रभाकर

'विशाल शरीर में विशाल आत्मा' स्वामी श्रद्धानन्द इस सत्य के मूर्तिमान स्वरूप थे। महात्मा गांधी के शब्दों में, ''वे अपने विश्वास का पालन करते थे। उन विश्वासों के लिए उन्हें कष्ट झेलने पड़े। भय के सामने उन्होंने कभी सिर नहीं झुकाया। उनसे बढ़कर बहादुर आदमी मैंने संसार में दूसरा नहीं देखा। मरने का उन्हें डर नहीं था क्योंकि वे सच्चे आस्तिक और ईश्वरभक्त थे। मैं साक्षी हूँ कि देश के लिए अपना शरीर भेंट कर देने की उन्होंने प्रतिज्ञा की थी। वे अनाथ बंधु थे। अछूतों के लिए जितना उन्होंने किया उससे अधिक हिन्दुस्तान में किसी दूसरे व्यक्ति ने नहीं किया।''

उनके मृत्यु का वरण कर लेने के बाद गांधी जी ने लिखा था, ''मृत्यु किसी समय भी सुखदायक होती है। उस वीर के लिए दुगुनी सुखदायक होती है जो अपने ध्यये और सत्य के लिए प्राणों का विसर्जन करता है। इसलिए मैं उनकी मृत्यु पर शोक नहीं मना सकता। उनसे और उनके अनुयायियों से मुझे एक प्रकार से ईर्ष्या होती है, क्योंकि यद्यपि श्रद्धानन्द जी मर गये हैं तथापि वे जीवित हैं। वे उससे भी अधिक सच्चे अर्थ में जीवित हैं जब वे अपनी विशाल देह के साथ हमारे बीच में विवरण करते थे। जिस कुल में उनका जन्म हुआ और जिस देश के सथ उनका सम्बन्ध था वे उनकी इस प्रकार की शानदार मृत्यु पर बधाई के पात्र हैं। वे वीर के समान जिए और वीर के समान मरे....''

गांधी जी में मनुष्य को पहचानने की अद्‌भुत क्षमता थी। अनेक मतभेदों के बावजूद उनका यह मूल्यांकन इस दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने स्वामी जी को मात्र साहसी और वीर पुरुष ही नहीं कहा है बल्कि भय को जीतने वाला कहा है और जो भय को जीत लेता है वह घृणा को भी जीत लेता है। वह सचमुच पुरुषों में पुरुष और नरों में नर होता है अर्थात् वह नारायण का सखा नर होता है।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू अनेक नेताओं के कटु आलोचक रहे हैं। वे अपनी भावनाओं को छिपाना नहीं जानते। अपनी आत्मकथा 'मेरी कहानी' में स्वामी श्रद्धानन्द का मूल्यांकन करते हुए उन्होंने उनका जो शब्द चित्र प्रस्तुत किया है वह किसी भी शब्दशिल्पी के लिए ईर्ष्या का विषय हो सकता है। वह लिखते हैं – ''विशुद्ध शरीरिक साहस का अथवा किसी भी शुभ कार्य के लिए शारीरिक कष्ट सहन करने एवं उस कार्य के लिए मृत्यु तक की परवाह न करने वाले गुणों का मैं सदा प्रशंसक रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि हम सभी व्यक्ति ऐसे अद्‌भुत साहस करते ही हैं। स्वामी श्रद्धानन्द में इस प्रकार का निर्भीकतापूर्ण साहस आश्चर्यजनक मात्रा में विद्यमान था। वृद्धावस्था में भी उनकी उन्नत सीधी आकृति, संन्यासी के वेश में भव्य मूर्ति, दीर्घकाया, शाहाना सूरत, अंतर्भेदी दीप्त नयन और कभी–कभी दूसरों की कमजोरियों पर चेहरे पर उभर आने वाली झुंझलाहट या गुस्से की छाया का गुजरना – मैं इस जीवन्त मूर्ति को कैसे भूल सकता हूँ। प्रायः यह तस्वीर मेरी आंखों के सामने आ खड़ी होती है।''

इस शब्द चित्र में नेहरू जी ने भी जिस एक गुण को विशेष रूप से रेखांकित किया है वह निर्भीकता ही है। और कवि तो क्रांतदृष्टा होता है। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर स्वामी जी के अन्तर में झांकते हुए न केवल उनकी निर्भीकता को वरण करते हैं बल्कि सत्य के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा को भी पहचान लेते हैं, ''श्रद्धानन्द जी की भारत को देन उनकी सत्य में अगाध श्रद्धा है। श्रद्धानन्द यह नाम ही उनकी उस भावना का परिचायक है। वे नित्यप्रति श्रद्धावान थे और उसी में आनन्द मनाते थे। उनके लिए सत्य और जीवन एक हो गये थे। सत्य ही जीवन था और जीवन ही सत्य था। उनकी मृत्यु उनके निर्भीक और अनथक प्रयत्नों के अमर चित्रों को आलोकित करती हुई एक प्रकाश किरण की तरह हमारे सामने आती है।''

विश्व कवि की तरह ही भारत कोकिला सरोजिनी नायडू अपनी अप्रतिम काव्यमयी भाषा में अपने अनुराग के इस आराध्य देवता की मूर्ति का रेखांकन इस प्रकार करती है, ''मैं सदैव अनुभव करती रही हूँ कि स्वामी श्रद्धानन्द भारत के वीर काल की

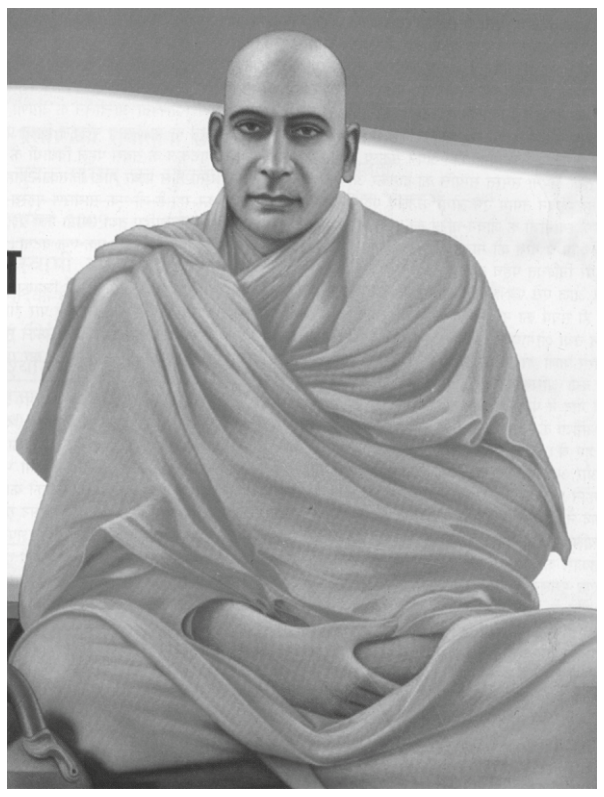

एक दिव्य विभूति थे। अपने भव्य और उन्नत व्यक्तित्व के द्वारा वे अपने साथियों में देवता की तरह विचरण करते थे। वह एक बड़े शिक्षा केन्द्र गुरुकुल कांगड़ी के (संस्थापक) मुख्याधिष्ठाता भी रहे। यद्यपि उन्होंने कभी किसी बड़े विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त नहीं की थी तो भी वे अपने जीवन के अंतिम क्षण तक जो शहादत से आलोकित हो उठा था, साहस और कर्मयोग की अनुपम मूर्ति रहे और भारतीय जीवन के धार्मिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में और राष्ट्र सुधार के कार्यों में इन गुणों का सुन्दर और सटीक परिचय देते रहे। मानव समाज की सेवा के सम्बन्ध में उनके भावों का मैं आदर करती हूँ।''

देश ही नहीं, देश के बाहर भी 'कल्याणमार्ग के इस पथिक' की कर्त्तव्यनिष्ठा, मानव मात्र के प्रति प्रेम, सत्य के प्रति अगाध निष्ठा और आत्मत्याग और कष्ट सहन करने की अद्‌भुत क्षमता की तीव्र ज्योति जगमगा उठी थी। भारत भक्त प्रेममूर्ति सी.एफ. एंड्रयूज उनकी 'स्वच्छ और निर्मल मैत्री' पर सदा गर्व करते रहे। उनकी मृत्यु पर उन्होंने कहा था, ''उनकी पुण्य स्मृति का सम्मान करने का एकमात्र मार्ग यही है कि हम उन निर्धनों को जिन्हें वे अपने अंतरतम् से प्यार करते थे, अपना प्रभु समझें।''

और ग्रेट ब्रिटेन के मजदूर दल के नेता तथा एक समय के प्रधानमंत्री रेम्जे मैकडानल्ड उनके रूप पर, जो अन्तर के आलोक से आलोकित था, मुग्ध होकर कह उठे थे – ''वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि ईसा की मूर्ति बनाने के लिए कोई जीवित मॉडल सामने रखना चाहे तो मैं इस भव्य मूर्ति की ओर संकेत करूंगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सैंट पीटर के चित्र के लिए नमूना मांगेगा तो मैं उसे इस जीवित मूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा दूंगा।''

ऊपर हमने दो राष्ट्र पुरुषों, दो सर्जकों और दो भारत भक्त विदेशियों के द्वारा किया गया उनका बोलता मूल्यांकन प्रस्तुत किया है। इस मूल्यांकन में जिन शब्दों का प्रयोग हुआ है वे मात्र शब्द नहीं हैं बल्कि 'अर्थ' का समन्वित रूप हैं। अर्थ पहले होता है, शब्द मात्र उसे आकार देते हैं। इसी कारण संभवतः शब्द को ब्रह्म कहा गया है। ब्रह्म ही स्रष्टा है और शब्द भी स्रष्टा है। लेकिन शब्द किसी नई वस्तु का सृजन नहीं करता बल्कि जो अर्थ पहले से मौजूद है उसे ही रूपायित करता है। इसे यों कहना और भी सार्थक होगा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने जो जीवन जिया था उसी को उपरोक्त महापुरुषों ने शब्दों में रूपायित किया है। अनादिकाल से कवि शब्दों के माध्यम से जीने की इसी कला को नाना रूपों में रेखांकित करता आया है या कहें पुनः सर्जित करता आया है।

लेकिन क्या यह आश्चर्यजनक नहीं लगता कि जो व्यक्ति जीवन को इतनी ऊँचाईयों पर प्रतिष्ठित कर सका, वह प्रारम्भ में वही सब कुछ करता था जो छोटे–मोटे विलासी जमींदार और रईस करते रहे हैं। तब उस व्यक्ति का नाम था मुंशीराम और मांस–मदिरा और नारी, कुछ भी नहीं छूटा था उससे। लेकिन पतन के उस मोहक मार्ग पर आगे बढ़ते हुए भी उसमें ऐसा कुछ था जो एक आवारा व्यक्ति को अन्ततः मसीहा बना देता है। अपराजेय कथा शिल्पी शरत् ने पाप की कौन सी गली में पैर नहीं रखा? कौन सा कुकर्म नहीं किया? पर फिर भी वह गर्व से यह कह सके, ''मेरा जीवन अन्ततः मानो एक उपन्यास ही है। इस उपन्यास में सब कुछ किया है पर छोटा काम कभी नहीं किया है। जब मरूँगा निर्मल खाता छोड़ जाऊँगा। उसके बीच स्याही का दाग कहीं भी नहीं होगा।''

यह छोटा काम क्या है, इसकी व्याख्या इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं है जितनी महत्त्वपूर्ण यह बात है कि इस प्रकारा का दावा करने वालों में वह कौन सी विशेषता होती है जो उन्हें कल्याण मार्ग का पथिक बना देती है और भीतर की इंसानियत को नष्ट नहीं होने देती।

ऐसे मनुष्यों के भीतर एक कुरेदना होती है, एक जिज्ञासा होती है कि जो है, उससे आगे कुछ और है। उससे इतर भी कुछ और है। उनकी चिन्तन की प्रक्रिया और तलाश निरंतर प्रवहमान रहती है। नेति–नेति न इति, न इति, इतना ही नहीं, इतना ही नहीं और भी है। यहीं तक नहीं, यहीं तक नहीं और आगे भी है। यही नहीं है, कुछ और भी है।

वैज्ञानिक युग में सत्य से बढ़कर सत्य की तलाश का महत्त्व होता है। जो महाप्राण हैं वे अंधी गलियों में विचरण करते हुए भी तलाश का दीया जलाए रहते हैं। यह दीया ही उन्हें अपने सही मार्ग को खोज लेने में मदद करता है। आवारा या पथभ्रष्ट व्यक्ति नितांत गुणहीन नहीं होता, केवल दिशाहीन होता है। ऊर्जा उसमें होती है बल्कि कुछ अधिक ही होती है और जब इस ऊर्जा को दिशा मिल जाती है तो वह मसीहा ही बनता है।

स्वामी श्रद्धानन्द आर्य समाज के प्रथम पंक्ति के नेताओं में अन्यतम थे। पर यह योग्यता उन्हें विरासत में नहीं मिली थी। इस विश्वास को उन्होंने स्वयं अर्जित किया था जो विरासत में मिलता है उसका सही–सही मूल्य हम नहीं आंक सकते पर जो हम स्वयं अर्जित करते हैं वह हमारा वास्तविक मूलधन होता है। उस मूलधन को प्राप्त करने की योग्यता भी होनी चाहिए। उसी योग्यता का नाम है तलाश। इसी तलाश ने कहां–कहां नहीं भटकाया मुंशीराम को। विरासत में उन्हें विलासिता के साथ–साथ धर्म में अटूट आस्था भी मिली थी।

स्वामी दयानन्द के प्रभाव में आकर वे आर्य समाज की ओर झुक रहे थे। निरंतर स्वाध्याय करते थे। 'सत्यार्थ प्रकाश' भी पढ़ा। जब उनके मन में उठने वाली सभी शंकाओं का समाधान हो गया तभी वे आर्य समाज के सदस्य बने। अपने पहले ही भाषण में उन्होंने कहा था , ''हमारे विचार और कर्म में एकरूपता होनी चाहिए। जो वैदिक धर्म के सिद्धान्तों के अनुरूप अपना जीवन नहीं जी सकता उसे उपदेश देने का अधिकार नहीं है। भाड़े के टट्टुओं से धर्म का प्रचार नहीं हो सकता। इस पवित्र काम के लिए निःस्वार्थ और त्यागी पुरुषों की आवश्यकता है।''

उनका यह भाषण सुनकर आर्य समाज के वयोवृद्ध नेता लाला साईंदास ने कहा था, ''आर्य समाज में एक नई स्पिरिट का प्रवेश हुआ है, देखें वह इसे तारती है या डुबोती है।'' इतिहास साक्षी है स्वामी श्रद्धानन्द जीवन भर अपने उस पहले व्याख्यान को ही सार्थक करते रहे। इतिहास इस बात का भी साक्षी है कि स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज को सही रूप देने में, पुष्पित और पल्लवित करने में जिन व्यक्तियों का योगदान कसौटी पर कसा जाकर कंचन प्रमाणित हुआ है, उनमें स्वामी श्रद्धानन्द का नाम इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है।

वैदिक धर्म के महान शिक्षा शास्त्री यज्ञशरण कुलश्रेष्ठ जी नहीं रहे

आर्य समाज नांगलोई के पूर्व प्रधान व संस्थापक सदस्य अनेकों संस्थाओं के प्रमुख रहे शिक्षा शास्त्री, समाजसेवी श्री यज्ञशरण कुलश्रेष्ठ जी का उनके निवास स्थान नांगलोई में 92 वर्ष की आयु में 24 नवम्बर, 2020 को देहान्त हो गया। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। जीवनभर आर्य समाज और वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में रत रहने वाले यशस्वी कुलश्रेष्ठ जी अपने पारदर्शी और संकल्पी व्यक्तित्व के कारण जन–मानस में लोकप्रिय और सम्मानित थे। शिक्षा जगत में उनका योगदान अत्यन्त व्यापक था। दिल्ली के कई भागों में उनका अच्छा प्रभाव था।

उनकी स्मृति में 6 दिसम्बर, 2020 को यज्ञ और श्रद्धांजलि सभा का आयोजन आर्य समाज नांगलोई के परिसर में किया गया। इस अवसर पर उनके प्रति बड़ी संख्या में आये आर्यजनों ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। उनके महान कृतित्व व व्यक्तित्व का स्मरण करते हुए वक्ताओं ने कहा कि आर्य समाज नांगलोगई के आधार कहे जाने वाले कुलश्रेष्ठ जी के जाने से एक युग का समापन हो गया है।

– अखिलेश आर्य

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जीन्द की चित्रमय झलकियाँ

आर्य जगत के भामाशाह, विश्वविख्यात समाजसेवी पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी नहीं रहे

आर्य समाज के महान दानवीर, प्रसिद्ध समाजसेवी, प्रतिष्ठत उद्योगपति एवं अनेकों संस्थाओं के संस्थापक एवं पोषक आदरणीय महाशय धर्मपाल जी का दिनांक 3 दिसम्बर, 2020 को प्रातःकाल 98 वर्ष की आयु में निधन हो गया है। वह एक जाने–माने उद्योगपति होने के साथ ही महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों के अनुरूप आर्य समाज के कार्यक्रमों एवं उसके द्वारा संचालित होने वाली आर्य संस्थाओं के लिए अपने सात्विक दान के रूप में लाखों रूपये की सहयोग राशियाँ जीवन पर्यन्त प्रदान करते रहे। वर्तमान में उनके द्वारा आर्य समाज की अनेक संस्थाओं को आर्थिक सहयोग प्राप्त हो रहा था और कई संस्थाएँ उनके सहयोग से स्थापित हुई थीं। ऐसे दानवीर का हम सबके बीच से अचानक चले जाना राष्ट्र एवं आर्य समाज संगठन की अपूर्णीय क्षति है। परन्तु परमात्मा के नियम के समक्ष नतमस्तक होने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं है। आदरणीय महाशय धर्मपाल जी ने अपने अथक परिश्रम एवं पुरुषार्थ के बल पर पूरे विश्व में ख्याति प्राप्त की। वे व्यवसाय जगत में मसालों के बादशाह माने जाते थे और उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में करोड़ों रुपये दान देकर एक

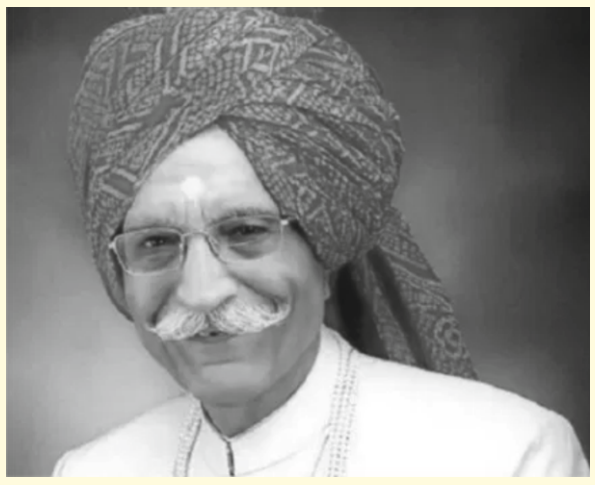

कीर्तिमान स्थापित किया। उन्हें आर्य समाज के भामाशाह की संज्ञा दी जाती थी। पाकिस्तान के सियालकोट से दिल्ली आकर उन्होंने जिस प्रकार से अपना व्यवसाय बढ़ाया, उसके उदाहरण बहुत कम मिलते हैं। आदरणीय महाशय जी के प्रति हम सबकी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके द्वारा अपने सात्विक सहयोग के माध्यम से स्थापित आर्य संस्थाओं एवं आर्य समाजों के कार्यक्रमों को सुचारू रूप से संचालित करने में अपना सहयोग प्रदान करने का संकल्प लें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने समस्त आर्य जगत की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि महाशय धर्मपाल जी के निधन से आर्य समाज का एक ऐसा विशाल बट वृक्ष ढह गया है जिसकी छाया में अनेकों संस्थायें आश्रय पाती थीं। उनका निधन आर्य समाज के लिए गहरा आघात है। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा पारिवारिक जनों एवं शुभ चिन्तकों को इस असह्य आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

महाशय धर्मपाल जी की स्मृति में दिनांक 13 दिसम्बर, 2020 को एस.डी. पब्लिक स्कूल, कीर्तिनगर, दिल्ली में 11 से 1 बजे तक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। श्रद्धांजलि सभा में नगर के अनेकों गणमान्य व्यक्तियों तथा आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने भारी संख्या में पहुंचकर श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

महाशय धर्मपाल गुलाटी जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

महाशय धर्मपाल गुलाटी जी का जीवन उतार–चढ़ाव, संघर्ष, परिश्रम और सफलता प्राप्ति का एक ऐसा उदाहरण है जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणास्रोत का कार्य कर सकता है। कठिन परिस्थितियों में हिम्मत न हारते हुए उन्होंने सफलता का वह अप्रतिम नमूना पेश किया जिसके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता। उनकी मेहनत व दृढ़ इच्छाशक्ति को देखते हुए केन्द्र सरकार ने उन्हें पद्मभूषण सम्मान से विभूषित किया।

महाशय धर्मपाल गुलाटी जी का जन्म 27 मार्च, 1923 को पाकिस्तान के सियालकोट में एक सामान्य परिवार में हुआ था। उनके पिता महाशय चुन्नीलाल और माता चन्नन देवी दोनों ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे। वे दोनों आर्य समाज के अनुयायी थे। धर्मपाल जी का बचपन सियालकोट में बीता, जहाँ उनके पिता की मिर्च, मसालों की दुकान थी, जिसका नाम था 'महाशयां दी हट्टी'। उनके पिता अपने बनाये मिर्च–मसालों के कारण उस क्षेत्र में दिग्गी मिर्च वाले के नाम से जाने जाते थे। धर्मपाल जी का मन कभी भी पढ़ाई–लिखाई में नहीं लगा। 5वीं कक्षा में फेल होने के बाद तो उन्होंने पढ़ाई से नाता ही तोड़ लिया और स्कूल छोड़कर घर पर बैठ गये और अपने पिता के व्यवसाय में हाथ बंटाने लगे। बचपन में ही धर्मपाल जी ने लकड़ी का काम, चावल की फैक्ट्री में काम के अतिरिक्त कपड़ों से लेकर हॉर्डवेयर तक के कई काम किये, लेकिन उनका मन इन कामों में नहीं लगा। आखिरकार उनके पिता ने उन्हें अपनी ही दुकान पर बैठा दिया और वह वहां पर अपने पिता के काम में हाथ बंटाने लगे। 18 वर्ष के होते–होते उनके पिता ने उनकी शादी लीलावती जी के साथ करवा दी और इस तरह अपनी तरफ से धर्मपाल जी के प्रति हर जिम्मेदारी पूर्ण कर ली। 1947 में जब देश का विभाजन हुआ तब धर्मपाल जी भी सियालकोट छोड़कर भारत आ गये। दिल्ली के करोलबाग में रहने वाली अपनी बहन के घर पहुँचकर उन्होंने वहीं रहना प्रारम्भ किया।

दिल्ली आने के बाद धर्मपाल जी को फिर से शून्य से ही शुरुआत करनी पड़ी। वे सियालकोट से जब भारत आये तो उनके पास मात्र 1500 रुपये की जमा–पूंजी थी जिसमें से 650 रुपये का उन्होंने एक तांगा और घोड़ा खरीदा और तांगा चलाने का कार्य प्रारम्भ किया। लेकिन अधिक समय तक वे इस काम में टिक नहीं पाये। दो महीने तांगा चलाने के बाद उन्होंने तांगा बेच दिया और अजमल खां रोड, करोलबाग में एक छोटी सी दुकान खरीद ली और उसी दुकान से उन्होंने मसालों का अपना पुश्तैनी कार्य फिर से शुरू कर दिया। अपनी इस दुकान का नाम उन्होंने 'महाशयां दी हट्टी' सियालकोट वाले

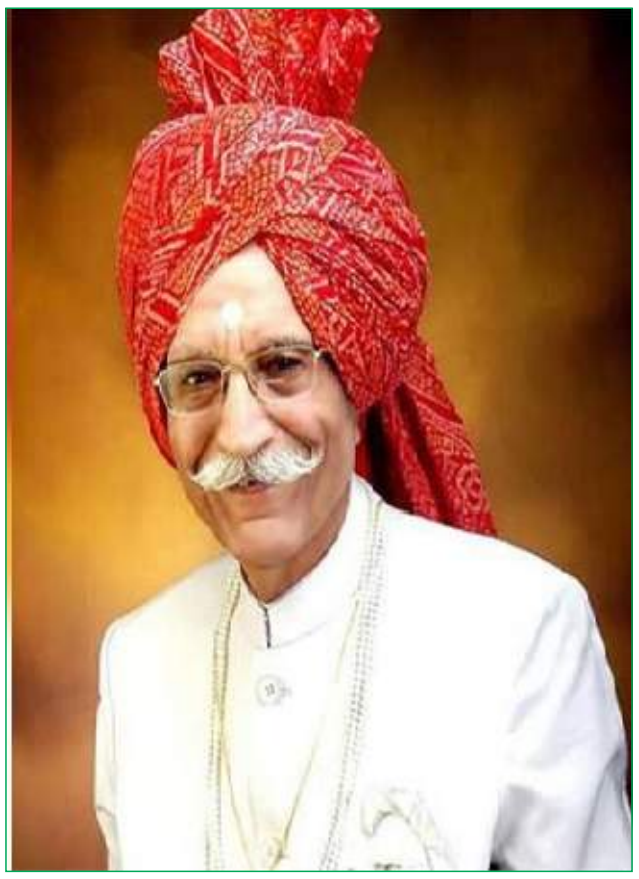

रखा। धीरे–धीरे उनकी मेहनत रंग लाने लगी और लोग उनकी दुकान पर उत्तम स्तर के मसाले खरीदने के लिए आने लगे। श्री धर्मपाल जी को बचपन से ही व्यापार पटुता का विशेष अनुभव था और उन्होंने अपनी दुकान को बढ़ाने के लिए आस–पास के क्षेत्रों में विज्ञापन आदि देने भी प्रारम्भ कर दिये थे। उनकी इस व्यापार पटुता के कारण उनके बनाये मसाले मशहूर होने लगे और उनका व्यापार बढ़ता चला गया। 1968 में उन्होंने दिल्ली में अपने मसालों की फैक्ट्री खोल ली उसके बाद पूरे भारत में और विदेशों में उनके मसाले एक्सपोर्ट होने लगे। आज महाशयां दी हट्टी (एम.डी.एच.) एक बहुत बड़ा ब्रान्ड है और विश्व के 100 से अधिक देशों में अपने 60 से अधिक उत्पादों की सप्लाई हो रही है। कभी दो आना लेकर तांगे में सवारी बैठाने वाले महाशय धर्मपाल आज खरबपति हो गये थे। उन्होंने अपनी मेहनत, लगन और कार्य के प्रति पूर्ण ईमानदारी से यह स्थान प्राप्त किया था।

एक उद्योगपति होने के साथ–साथ वे एक समाजसेवी भी थे। उन्होंने समाजसेवा के उद्देश्य से कई अस्पताल और स्कूलों का निर्माण करवाया। ज्ञातव्य हो कि महाशय धर्मपाल जी को आर्य समाज के भामाशाह के नाम से भी प्रसिद्धि मिली। उनके पास धन का सहयोग मांगने के लिए कभी भी कोई भी व्यक्ति यदि पहुँचा तो उन्होंने उसे कभी खाली हाथ वापस नहीं भेजा। आज उनके संरक्षण में अनेकों शिक्षा संस्थान गुरुकुल तथा अनेक संस्थाएं पल–बढ़ रही हैं।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में जनकपुरी में माता चन्नन देवी अस्पताल, माता लीलावती लेबोरेटरी, एम.डी.एच. न्यूरो साईंस संस्थान, नई दिल्ली, महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. आरोग्य मंदिर, सैक्टर–76, फरीदाबाद, महाशय संजीव गुलाटी आरोग्य केन्द्र ऋषिकेश, महाशय धर्मपाल हृदय संस्थान सी–1, जनकपुरी में स्थित है। श्री महाशय धर्मपाल जी का योगदान शिक्षा के क्षेत्र में भी अहम रहा। उन्होंने लगभग 20 शिक्षण संस्थाएं खुलवाई जिनमें प्राइमरी, सेकेण्ड्री, एम.डी.एच. इण्टरनेशनल स्कूल, महाशय चुन्नीलाल सरस्वती शिशु मंदिर, माता लीलावती कन्या विद्यालय इत्यादि प्रमुख हैं। प्राचीन भारतीय संस्कृति के पुनरूत्थान के लिए वे हमेशा चिन्तित रहते थे और इसकी पूर्ति के लिए उन्होंने आदिवासी क्षेत्रों में अनेकों गुरुकुलों की स्थापना करवाई और उनके संचालन के लिए नियमित धनराशि देने का प्रावधान किया। विभिन्न स्थानों पर स्थित गुरुकुल उनके संरक्षण में निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर हैं। महाशय धर्मपाल जी अपने माता–पिता की तरह कट्टर आर्य समाजी थे। आर्य समाज के कई वरिष्ठ पदों पर वे आसीन रहे। आर्य समाज के क्षेत्र में उनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा।

इतना बड़ा कारोबार और इतने व्यस्त जीवन के होते हुए उन्होंने अपनी दिनचर्या को बहुत संतुलित रखा था। वे रात को जल्दी सो जाते थे और सुबह 4 बजे बिस्तर छोड़ देते थे। थोड़ी देर व्यायाम करने और हल्का नाश्ता लेने के बाद वे टहलने अवश्य जाया करते थे। महाशय धर्मपाल जी का कहना था कि उनकी लम्बी आयु का राज कम खाने और नियमित व्यायाम में छिपा है। वे अपने सफेद दांत दिखाते हुए कहते थे कि मैं बुढ्ढा नहीं अपितु जवान हूँ। वे अपने मसालों के खुद विज्ञापन करते थे और कहते थे कि क्या मैं किसी हीरो से कम स्मार्ट हूँ।

अपने व्यवसाय में महाशय धर्मपाल जी मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सी.ओ.) के पद पर विराजमान रहे। जहाँ से उन्हें वार्षिक 25 करोड़ रुपये वेतन मिलता था जिसका बहुत बड़ा हिस्सा वह आर्य समाज के कार्यों, समाजसेवा व सामाजिक संस्थाओं को दान कर देते थे। उनका कहना था कि यही सबसे बड़ी शांति है। पैसे में सुख दो घड़ी का और सेवा में सुख जिन्दगीभर का। इसलिए अगर शांति पानी है, सुख पाना है तो बांटते चलो। महाशय धर्मपाल जी के जीवन से हम जितना भी सीख सकें वह कम ही है। उन्होंने हमेशा सादा जीवन जिया। कठिन परिश्रम करना उनके जीवन का ध्येय था।

स्वराज्य, स्वधर्म व स्वाभिमान हेतु
बलिदानी महात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

–विनोद बंसल

महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द जी की एडवोकेट मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानंद तक जीवन यात्रा विश्व के प्रत्येक व्यक्ति के लिए बेहद प्रेरणादायी है। स्वामी श्रद्धानंद उन बिरले महापुरुषों में से एक थे जिनका जन्म ऊंचे कुल में हुआ किन्तु बुरी लतों के कारण प्रारंभिक जीवन बहुत ही निम्न स्तर का था। स्वामी दयानंद सरस्वती से हुई एक भेंट और पत्नी के पतिव्रत धर्म तथा निश्छल निष्कपट प्रेम व सेवा भाव ने उनके जीवन को क्या से क्या बना दिया। काशी विश्वनाथ मंदिर के कपाट सिर्फ रीवा की रानी के लिए खोलने और साधारण जनता के लिए बंद किए जाने व एक पादरी के व्यभिचार का दृश्य देख मुंशीराम का धर्म से विश्वास उठ गया और नास्तिकता से ओत–प्रोत होकर वह बुरी संगत में पड़ गए।

किन्तु, स्वामी दयानंद सरस्वती के साथ बरेली में हुए सत्संग ने ना सिर्फ उन्हें जीवन का अनमोल आनंद दिया अपितु उन्होंने उसे सम्पूर्ण संसार को खुले मन से वितरित भी किया। समाज सुधारक के रूप में उनके जीवन का अवलोकन करें तो पाते हैं कि प्रबल विरोध के बावजूद, उन्होंने, स्त्री शिक्षा के लिए अग्रणी भूमिका निभाई। ईसाई मिशनरी विद्यालय में पढ़ने वाली स्वयं की बेटी अमृत कला को जब उन्होंने 'ईसा–ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल। ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया' गाते हुए सुना तो वे हतप्रभ रह गए। वैदिक संस्कारों की पुनर्स्थापना हेतु उन्होंने घर – घर जाकर चंदा इकट्ठा कर गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की स्थापना हरिद्वार में कर अपने बेटे हरीश्चंद्र और इंद्र को सबसे पहले भर्ती करवाया।

स्वामी जी मानते थे कि जिस समाज और देश में शिक्षक स्वयं चरित्रवान नहीं होते उसकी दशा अच्छी हो ही नहीं सकती। उनका कहना था कि हमारे यहां टीचर हैं, प्रोफेसर हैं, प्रिसिंपल हैं, उस्ताद हैं, मौलवी हैं पर आचार्य नहीं हैं। आचार्य अर्थात् आचारवान व्यक्ति की महती आवश्यकता है। चरित्रवान व्यक्तियों के अभाव में महान से महान व धनवान से धनवान राष्ट्र भी समाप्त हो जाते हैं।

जात–पात व ऊंच–नीच के भेदभाव को मिटाकर समग्र समाज के कल्याण के लिए उन्होंने अनेक कार्य किए। अंग्रेजी में एक कहावत है कि चेरिटी बीगिन्स एट होम। अर्थात शुभकार्य का प्रारंभ स्वयं से करें। प्रबल सामाजिक विरोधों के बावजूद अपनी बेटी अमृत कला, बेटे हरिश्चद्र व इंद्र का विवाह जात–पात के समस्त बंधनों को तोड़ कर कराया। उनका विचार था कि छुआछूत ने इस देश में अनेक जटिलताओं को जन्म दिया है तथा वैदिक वर्ण व्यवस्था के द्वारा ही इसका अंत कर अछूतोद्धार संभव है।

वे हिन्दी को राष्ट्र भाषा और देवनागरी को राष्ट्र–लिपि के रूप में अपनाने के पक्षधर थे। सत्यधर्म प्रचारक नामक पत्र उन दिनों उर्दू में छपता था। एक दिन अचानक ग्राहकों के पास जब यह पत्र हिंदी में पहुंचा तो सभी दंग रह गए क्योंकि उन दिनों उर्दू का ही चलन था। त्याग व अटूट संकल्प के धनी स्वामी श्रद्धानन्द ने 1868 में यह घोषणा की कि जब तक गुरुकुल के लिए 30 हजार रुपए इकट्ठे नहीं हो जाते तब तक वह घर में पैर नहीं रखेंगे। इसके बाद उन्होंने भिक्षा की झोली फैलाकर न सिर्फ घर–घर घूम 40 हजार रुपये इकट्ठे किए बल्कि वहीं डेरा डाल कर अपना पूरा पुस्तकालय, प्रिंटिंग प्रेस और जालंधर स्थित कोठी भी गुरुकुल पर न्योछावर कर दी।

उनका अटूट प्रेम व सेवा भाव भी अविस्मरणीय है। गुरुकुल में एक ब्रह्मचारी के रुग्ण होने पर जब उसने उल्टी की इच्छा जताई तब स्वामी जी द्वारा स्वयं की हथेली में उल्टियों को लेते

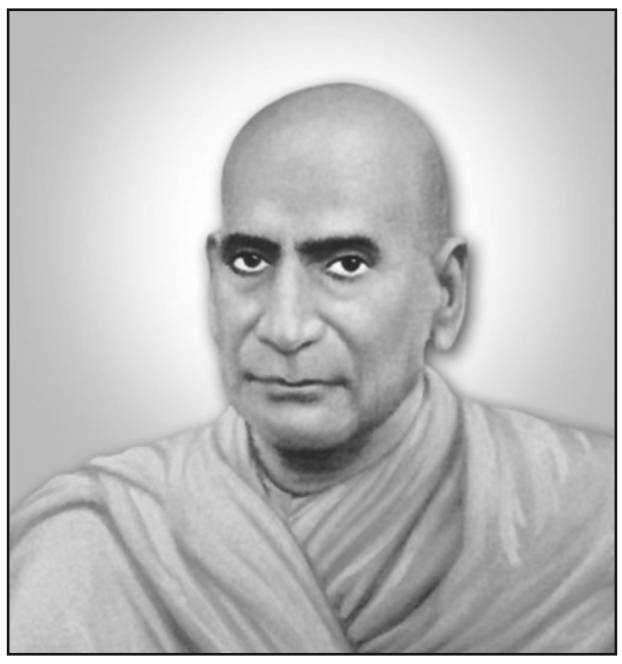

देख सभी हतप्रभ रह गए। ऐसी सेवा और सहानुभूति और कहां मिलेगी? स्वामी श्रद्धानन्द का विचार था कि अज्ञान, स्वार्थ व प्रलोभन के कारण धर्मांतरण कर बिछुड़े स्वजनों की शुद्धि करना देश को मजबूत करने के लिए परम आवश्यक है। इसीलिए, स्वामी जी ने भारतीय हिंदू शुद्धि सभा की स्थापना कर दो लाख से अधिक मलकानों को शुद्ध किया। परावर्तन के अनेक कीर्तिमान बनाने के बावजूद एक बार शुद्धि सभा के प्रधान को उन्होंने पत्र लिख कर कहा कि 'अब तो यही इच्छा है कि दूसरा शरीर धारण कर शुद्धि के अधूरे काम को पूरा करूं'। मुझे लगता है कि उनके शुद्धि आंदोलन के परिणाम स्वरूप ही आज दिल्ली भारत में हैं। अन्यथा, उस समय दिल्ली के आसपास बढ़ी मुस्लिम जनसंख्या के कारण विभाजन के बाद दिल्ली भी पाकिस्तान के हिस्से में चली जाती।

महर्षि दयानंद ने राष्ट्र सेवा का मूलमंत्र लेकर आर्य समाज की स्थापना की। कहा कि ''हमें और आपको उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन मन धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें''। स्वामी श्रद्धानन्द ने इसी को अपने जीवन का मूलाधार बनाया।

वे एक निराले वीर थे। इसी कारण लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल ने कहा था 'स्वामी श्रद्धानन्द की याद आते ही 1919 का दृश्य आंखों के आगे आ जाता है। सिपाही फायर करने की तैयारी में हैं। स्वामी जी छाती खोल कर आगे आते हैं और कहते हैं– 'लो, चलाओ गोलियां'। इस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं होगा? 'महात्मा गांधी के अनुसार' वह वीर सैनिक थे। वीर सैनिक रोग शैय्या पर नहीं, परंतु रणांगण में मरना पसंद करते हैं। वह वीर के समान जीये तथा वीर के समान मरे'।

अफ्रीका में भारतीयों के अधिकारों के लिए रंग भेद के विरुद्ध सत्याग्रह कर रहे गांधी जी को आर्थिक सहयोग करने की अपनी इच्छा जब स्वामी जी ने अपने गुरुकुल के शिष्यों के समक्ष रखी तो उनमें से कुछ वरिष्ठ शिष्यों ने हरिद्वार के पास ही बन रहे दूधिया बांध में कुछ दिन मजदूरी कर कमाए लगभग 2000 रुपए एकत्र कर गांधी जी को भेजे। इस सहयोग से अभिभूत गांधी जी ने भारत लौटने पर गुरुकुल काँगड़ी में स्वामी जी से भेंट की। गुरुकुल की शिक्षा पद्धति से प्रसन्न गांधी जी ने अपने बेटों को कुछ दिन गुरुकुल में ही रखा। स्वामी श्रद्धानंद ने ही एक मान पत्र के माध्यम से गांधी जी को 'महात्मा' की उपाधि से पहली बार संबोधित किया था।

देश की अनेक समस्याओं तथा हिंदोद्धार हेतु उनकी एक पुस्तक 'हिंदू सॉलिडेरिटी–सेवियर ओफ डाइंग रेस' अर्थात् ''हिंदू संगठन – मरणोन्मुख जाति का रक्षक'' तथा उनकी आत्मकथा 'कल्याण मार्ग के पथिक' आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रही हैं । संस्कारी शिक्षा, नारी स्वाभिमान, शुद्धि आंदोलन, राजनीतिक व समाजिक सुधार, स्वराज्य आंदोलन, अछूतोद्धार, वेद उपनिषद व याज्ञिक कार्यों का विस्तार इत्यादि के क्षेत्र में उनका योगदान सदियों तक विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगा।

राजनीतिज्ञों के बारे में स्वामी जी का मत था कि भारत को सेवकों की आवश्यकता है लीडरों की नहीं। शुद्धि आंदोलन से विचलित एक धर्मांध अब्दुल रशीद नामक इस्लामिक जिहादी ने 23 दिसंबर 1926 को चाँदनी चौक दिल्ली के दीवान हॉल स्थित कार्यालय में रुग्ण शैया पर लेटे स्वामी जी को धोखे से गोलियों से लहू–लुहान कर चिरनिद्रा में सुला दिया। वे आज स–शरीर भले हमारे बीच ना हों किन्तु, उनका व्यक्तित्व, कृतित्व व शिक्षाएं मानव–जाति का सदैव कल्याण करती रहेंगीं। भगवान श्री राम का कार्य इसीलिए सफल हुआ क्योंकि उन्हें हनुमान जैसा सेवक मिला। स्वामी श्रद्धानंद भी सच्चे अर्थों में स्वामी दयानन्द के हनुमान थे जो निस्वार्थ भाव से राष्ट्र–धर्म की सेवा के लिए तिल–तिल कर जले।

मो.:–9810949109

श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय, साधू आश्रम का स्थापना दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी कार्तिक शुदी–11 (एकादशी) दिन रविवार 25 नवम्बर, 2020 को श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय, साधू आश्रम, राजघाट रोड, अलीगढ़ का स्थापना दिवस क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों और भारी जनसमूह की उपस्थिति में सोल्लास शान्तिपूर्ण वातावरण में मनाया गया।

कार्यक्रम के शुभारम्भ में चतुर्वेद शतकम् मन्त्रों से बृहत यज्ञ सम्पन्न किया। यज्ञ के ब्रह्मा पद पर स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती विराजमान रहे। यज्ञमान के पदों पर श्री जवाहर लाल आर्य, भूतपूर्व अलीगढ़ बैंक मैनेजर श्री वीरेन्द्र सिंह उखलाना, श्री भूपेन्द्र चौधरी उनके सुपुत्र के अतिरिक्त श्री वेद प्रकाश वर्मा हरदुआगंज, श्री वीरेन्द्र यादव और श्री प्यारेलाल ग्वालरा तथा भारी संख्या में महिलायें और बालक–बालिकाएं उपस्थित रहे। यज्ञ में वेद पाठ ब्रह्मचारी ब्रजेश आर्य ने किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द अधिष्ठाता, श्रीकृष्ण आर्ष गुरुकुल देवालय, गौमत, अलीगढ़ उपस्थित थे।

यज्ञोपरान्त स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी ने अपने प्रवचन में ऋग्वेद के संगठन सूत्र की व्याख्या करते हुए कहा कि संगठन ही शक्ति है। संगठन के अभाव में न तो परिवार, न समाज और न राष्ट्र उन्नति कर सकता है। परस्पर विचार–विमर्श, सहयोग और सामूहिक पुरुषार्थ से मानव जीवन की सभी प्रकार की समस्याओं, कठिनाईयों, बाधाओं को दूर कर उन्नति के पथ पर

चला जा सकता है। वैदिक काल में ऋषि, मुनियों की संगठनात्मक एकता के आधार पर ही भारत ज्ञान–विज्ञान का केन्द्र था और इसे सोने की खान कहा जाता था। संगठन की शक्ति से ही भारत ने 900 वर्षों की गुलामी से छुटकारा पाया।

श्री शिवराज शास्त्री जी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। एक बांसुरी वाले संन्यासी जी ने अपनी बांसुरी से आध्यात्मिक धुन बजाकर उपस्थित जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

मुख्य अतिथि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने सम्बोधन में मानव जीवन में यज्ञ अर्थात् देवपूजा, संगतिकरण और दान की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला।

उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों में विद्यालय के आचार्य श्री वैनामी सिंह, श्री टीकम सिंह, श्री अमित गर्ग, श्री ऋषिपाल आर्य, श्री ओंकार शास्त्री, श्री राम बिहारी आर्य, श्री रूप सिंह आर्य और श्री सत्यपाल शास्त्री तथा अन्य आर्यजन उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. जीवन सिंह जी ने किया। कार्यक्रम की समाप्ति पर शांति पाठ के उपरान्त सभी उपस्थित जनों को सामूहिक प्रीति भोज भी कराया गया।

– प्रो. जीवन सिंह, प्राचार्य

पृष्ठ 1 का शेष

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जीन्द (हरियाणा) में भव्यता के साथ सम्पन्न

स्वामी आर्यवेश जी ने किया किसान आन्दोलन का समर्थन

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने देश के विभिन्न किसान संगठनों द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन का आर्य समाज की ओर से समर्थन करते हुए कहा कि हमारा देश कृषि प्रधान देश है और किसान को हम अन्नदाता के रूप में पूजते हैं। किसानों की कड़ी मेहनत और लगन से हम सभी का भरण–पोषण होता है। आर्य समाज के संस्थापक और प्रसिद्ध समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने स्व–रचित प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में किसानों को राजाओं का राजा कहा है और आज उसी किसान को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए आन्दोलन के रास्ते पर चलना पड़ रहा है। लगातार पिछले 17 दिनों से लाखों किसान दिल्ली के चारो तरफ सर्दी के इस ठिठुरन भरे मौसम में परिवार सहित धरना दे रहे हैं। किसानों का यह आन्दोलन केन्द्र सरकार द्वारा बनाये गये तीन कृषि कानूनों के विरुद्ध एवं अन्य किसान सम्बन्धी जायज मांगों को लेकर किया जा रहा है और सबसे बड़ी बात इस आन्दोलन की यह है कि अत्यन्त शांति, धैर्य और लोकतांत्रिक तरीके से यह आन्दोलन चल रहा है। इस आन्दोलन के दौरान 9 किसान अपने प्राणों की आहूति दे चुके हैं। सरकार और किसानों के बीच कृषि कानून को लेकर जो संशय है उसे सरकार को जल्द से जल्द निपटा लेना चाहिए, क्योंकि इस तरह के आन्दोलन और धरना प्रदर्शन से किसानों के साथ–साथ आम जनता को भी काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। यदि सरकार इस आन्दोलन को और अधिक लम्बा खींचने का प्रयास करती है तो अनुशासित किसानों का धैर्य भी जवाब दे सकता है। सरकार को किसानों के धैर्य की परीक्षा नहीं लेनी चाहिए। सरकार को आगे बढ़कर किसानों की मांगों को स्वीकार कर लेना चाहिए और उनसे आवश्यक बिन्दुओं पर विचार–विमर्श करके नये कानून बनाने की तरफ अग्रसर होना चाहिए। इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए यदि संसद का विशेष सत्र भी बुलाना पड़े तो उसे भी बुला लेने में कोई एतराज नहीं होना चाहिए।

ज्ञातव्य हो कि किसान इस देश की रीढ़ है और देश में लगभग 73 प्रतिशत आबादी खेती करने वाले किसानों की है। सारे देश का पेट भरने के लिए किसान ही अन्न पैदा करता है। अन्न ही नहीं बल्कि दूध, फल, सब्जी आदि का उत्पादन भी किसान ही करता है। यदि आज किसान परेशान है, आन्दोलनरत है, अपना घर–वार, बच्चे छोड़कर सड़क पर बैठा है तो यह उनके साथ घोर अन्याय व अत्याचार है इसकी अनुभूति केन्द्र सरकार और अन्य सभी सरकारों को गम्भीरता से होनी चाहिए। आर्य समाज किसानों के इस आन्दोलन का पूर्ण समर्थन करता है और सरकार से मांग करता है कि अविलम्ब इस आन्दोलन को समाप्त करायें तथा किसानों की मांगों को स्वीकार करें। सरकार को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि इस आन्दोलन को चलते काफी समय व्यतीत हो गया है यदि सरकार की ढिलाई और उपेक्षा के कारण किसानों का धैर्य टूट गया तो इसके दुष्परिणाम अत्यन्त घातक हो सकते हैं और इसकी पूरी जिम्मेदारी सरकार की ही होगी।

आर्य समाज की ओर से इस आन्दोलन का हम पूर्ण समर्थन करते हैं और सरकार से मांग करते हैं कि किसानों की मांगों को अविलम्ब स्वीकार करें और किसानों को प्रसन्नतापूर्वक उनके घर जाने का मार्ग प्रशस्त करे।

कार्यक्रम के संचालक व नशा बंदी परिषद के प्रधान स्वामी रामवेश ने कहा कि देश में राष्ट्रीय स्तर पर नशाखोरी पर प्रतिबन्ध लगे और शराब के उत्पादन व विक्रय पर पूर्ण रोक लगाई जाये। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने भारतीय संस्कृति के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि युवाओं को संस्कारित करना आज की सबसे बड़ी प्राथमिकता होनी चाहिए, क्योंकि संस्कारित युवा ही समाज में समरसता स्थापित करने में तथा विभिन्न बुराईयों को दूर करने में अपना योगदान देते हैं। उन्होंने कहा रोज सुबह उठकर माता–पिता के पैर छूकर जो युवा आशीर्वाद लेते हैं उनकी बल–बुद्धि और ऐश्वर्य निश्चित रूप से बढ़ता है। उन्होंने कहा कि युवाओं को यह समझना चाहिए कि आज उनका जो जीवन है वह माता–पिता की बदौलत ही है। माँ–बाप खुश हैं तो परमात्मा अपने आप खुश हो जायेंगे। उन्होंने कहा कि हर परिवार में सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय अवश्य होना चाहिए। वेद के सिद्धान्तों पर चलकर ही हम अपने जीवन को आदर्श बना सकते हैं।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने समाज में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार, अनाचार, कन्या भ्रूण हत्या एवं बलात्कार की घटनाओं पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि इन्हें समाप्त करने के लिए समाज के जागरूक लोगों को आगे आना चाहिए और इन बुराईयों को मिटाने के लिए अभियान चलाना चाहिए।

हाईकोर्ट के वकील व आर्य नेता रणधीर रेढू ने कहा कि धर्म के नाम पर चल रहे पाखण्ड तथा अन्धविश्वास के कारण भी जनता का शोषण किया जाता है और अनेक पाखण्डी बाबा अपने को भगवान बताकर भोली भाली धर्म भीरू जनता को लूट रहे हैं। यह अत्यन्त चिन्ताजनक स्थिति है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सम्मेलन में आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं का सम्मान स्मृति चिन्ह देकर किया। जिनमें सर्वश्री सुबेर सिंह, सहदेव शास्त्री, सत्यवीर, प्रिंसिपल इंद्र सिंह आर्य, सत्यवीर शास्त्री, होशियार सिंह, श्यामलाल आर्य, कर्मबीर आर्य, दौलत राम आर्य, नारायणी देवी मुख्य रहीं।

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

भारी छूट पर उपलब्ध

मात्र 3100/- में

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

एक वेद सैट मात्र 3100/- रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर

लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–ः प्रकाशक ः–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 • दूरभाष : 011–23274771

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जीन्द में सम्मान के दृश्य

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।